From -
Dr. Arun Kumar
Reader
Deptt of sociology
Sherghati college
Sasaram

[redacted]
28/5/20

समाजशास्त्र
BA Part III
Paper - VII

Social Pathology

(बाल अपराध के कारण)
[Causes of Juvenile Delinquency]

→ बाल अपराध की समस्या को किसी एक कारण के आधार पर नहीं समझा जा सकता है, सदरलैण्ड ने अपराधी गिरोहों की संगति को बाल-अपराध के सबसे मुख्य कारण के रूप में स्पष्ट किया था। क्लीनार्ड ने पश्चिमी देशों की दशाओं को ध्यान में रखते हुए नियंत्रण के अभिकरणों जैसे - पुलिस न्यायालय और शिक्षण संस्थाओं की दोषपूर्ण व्यवस्था एवं रेडीकिंग और चलचित्रों के दूषित प्रभाव के आधार पर बाल अपराध की व्याख्या की। यदि हम भारत के सन्दर्भ में बाल-अपराध के कारणों की विवेचना करें तो स्पष्ट होगा कि यहाँ अनेक पारिवारिक, मनोवैज्ञानिक, व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक तथा कुछ अन्य दशाएँ संयुक्त रूप से बाल अपराध की समस्या के लिए उत्तरदायी हैं।

→ (1) पारिवारिक कारण - भारत में परिवार की दशाएँ बच्चों के व्यवहारों को व्यापक रूप से प्रभावित करती हैं। परिवार बच्चे का प्राथमिक पर्यावरण है। यहीं से प्राप्त होने वाले सीख उसकी मानसिकता, विचारों और व्यवहारों को प्रभावित करती है। पारिवारिक कारणों में बाल अपराध के लिए उत्तरदायी दशाएँ इस प्रकार हैं।

→ (1) टूटे परिवार - जिन परिवारों का पर्यावरण दूषित होता है उन्हें हम टूटे परिवार कहते हैं। यदि माता-पिता के बीच तलाक हो चुका हो, परिवार के किसी सदस्य की जेल हो गई हो अथवा परिवार में अनैतिक ढंग से आजीविका उपार्जित की जा रही हो तो परिवार टूटने लगता है। टूटे परिवारों में एक ओर बच्चे की अनिवार्य आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो पाती तथा दूसरी ओर परिवार के वातावरण से बच्चों में ऐसी उत्तेजनाएँ पैदा होने लगती जिनके प्रभाव से वह बचपन से ही समाज विरोधी करना आरम्भ कर देता है। टूटे परिवार का वातावरण लड़कों की तुलना में लड़कियों के जीवन को अधिक प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है। - बाल अपराधियों के एक सर्वेक्षण में यह पाया गया है कि 40 प्रतिशत बाल अपराधी - परिवार के दूषित पर्यावरण के कारण ही अपराधी बनते हैं।

→ (2) अर्द्ध नष्ट परिवार — यह वे परिवार हैं जिनमें माता-पिता का बच्चों पर कोई नियंत्रण नहीं होता

→ 2

परिवार के सदस्य बेरोजगार होते हैं माता अथवा पिता की आय का अधिकांश हिस्सा शराब पीने से समाप्त हो जाता है। अथवा माता-पिता के पास इतना समय नहीं होता कि वे बच्चों को कोई स्नेह दे सकें। इस वातावरण में बच्चों की संगति बिगड़ने लगती है तथा वे अक्सर सामान्य अपराध करना आरम्भ कर देते हैं।

(3) माता पिता का दुर्व्यवहार — परिवार में यदि बच्चे को माता पिता के दुर्व्यवहार का शिकार बनना पड़े तो उसमें आरम्भ से ही घृणा, क्रूरता और प्रतिशोध की भावना पैदा होने लगती है। परिवार में अक्सर सौतेली माँ अथवा सौतेले पिता के कारण बच्चों के साथ भेद-भाव का व्यवहार किया जाने लगता है। अनेक माता-पिता स्वयं बच्चों को अक्सर भीख मांगने के लिए अथवा अपराधी गिरोहों के साथ कार्य करने के लिए बाध्य कर देते हैं। यह दशा भी बच्चों को अपराधी बना देती है।

(4) दोषपूर्ण अनुशासन — अत्यधिक कठोर अनुशासन अथवा बच्चों की दी जाने वाली आवश्यकता से अधिक स्वतन्त्रता भी ऐसी दशाएँ हैं जो बच्चों को अपराध की ओर ले जाती है। दूसरी-2 बात पर बच्चों को शारीरिक दण्ड देने से बच्चे स्वयं ही क्रूर हो जाते हैं। यही प्रवृत्ति उन्हें साथियों से मार-पीट करने और हिंसक व्यवहार करने की प्रेरणा देती है। अधिक लाड़-प्यार से बच्चों में जुआ खेलने, शराब पीने तथा यौनिक अपराध करने की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है।

(5) पक्षपातपूर्ण व्यवहार — परिवार में यदि किसी बच्चे को अधिक प्यार दिया जाने तथा किसी दूसरे बच्चों के साथ हमेशा कठोर व्यवहार किया जाये तो स्वाभाविक है कि ऐसे कठोर व्यवहार से बच्चे के मन में ईर्ष्या और बदले की भावना उत्पन्न होने लगती है। बदले भावना वाले अधिकांश बच्चे पक्षपातपूर्ण व्यवहार के कारण ही अपराधी गिरोहों के सम्पर्क में पड़ जाते हैं। ऐसे बच्चों को घर के वातावरण की अपेक्षा अपराधी प्रवृत्ति के बच्चों के साथ उठना बैठना अधिक अच्छा लगता है।

Scanned by TapScanner

→ (6) दोषपूर्ण आवास – भारत के नगरों में मकान की कमी के कारण निम्न आर्थिक वर्ग के अधिकांश लोग एक ही कमरे वाले मकान अथवा झुग्गी – झोपड़ियों में निवास करते हैं। इन मकानों में बच्चों को सभी तरह की दशाओं के देखने और सुनने का अवसर मिलने के कारण उनमें उत्तेजना पैदा होने लगती है। बहुत से बच्चे इस उत्तेजना के कारण अश्लील व्यवहार, यौनिक अपराध तथा मारपीट जैसे अपराधों के शिकार हो जाते हैं। घर में स्थान की कमी के कारण बच्चे गलियों में समाज-विरोधी प्रवृत्ति के बच्चों के साथ खेलने लगते हैं। यदि मकान किसी अपराधी क्षेत्र में बना है तो भी बच्चे आरम्भिक जीवन से ही अपराधी व्यवहारों का अनुकरण करने लगते हैं।

→ (7) बच्चों का तिरस्कार – जिन परिवारों में माता – पिता का जीवन बहुत व्यस्त होता है अथवा अपना सुख - सुविधाओं में पड़े रहते हैं वे बच्चों को अपनी स्वतन्त्रता में बाधक समझने लगते हैं। वहाँ बच्चों का जीवन बहुत तिरस्कृत हो जाता है। इस दशा में बच्चों का मानसिक सन्तुलन बिगड़ने लगता है। इसी के फलस्वरूप उनमें अपराधी व्यवहार की प्रवृत्ति उत्पन्न होने लगती है।

→ (8) बुरा पड़ोस – बच्चों का जीवन अपने पड़ोस से बहुत अधिक प्रभावित होता है। औद्योगिक नगरों की घनी आबादी के अस्वस्थ वातावरण के प्रभाव से बहुत से बच्चे बाल अपराधी बन जाते हैं।

→ (2) मनोवैज्ञानिक तथा व्यक्तिगत कारण – बच्चे का मस्तिष्क बाल अपराधों में मानसिक अस्थिरता पायी जाती है। साधारणतया बच्चों की जब सामान्य इच्छाएँ और अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती तो उसके मन में अनेक प्रकार के तनाव उत्पन्न होने के कारण ही वह हर समय अपने को असन्तुलित अनुभव करने लगता है।

→ (1) मानसिक अस्थिरता – यह पाया गया है कि मनोवैज्ञानिक रूप से अधिकांश बाल अपराधियों में अस्थिरता पाई जाती है।

→ (2) बुद्धि का निम्न स्तर – यह देखने को मिलता है कि अधिकांश बाल अपराधियों की बुद्धि का स्तर सामान्य से कुछ कम होता है।

Scanned by TapScanner

→ (3) अधिक सुख की इच्छा – मनोवैज्ञानिक रूप से बाल अपराधियों में यह भावना बहुत प्रबल होती है कि उच्च वर्ग के लोगों की तरह उन्हें भी अधिक से अधिक सुख सुविधाएं मिलनी चाहिए।

→ (4) दोषपूर्ण चरित्र – अधिकांश बाल अपराधियों में ईमानदारी, नैतिकता तथा सम्मानजनक व्यवहार की कमी पाई जाती है।

→ (5) हीनता की भावना – अनेक दशाओं में बच्चे अपनी हीनता की भावना को दूर करने के लिए अपराधी व्यवहार करने लगते हैं। इस हीनता की भावना को वे मादक पदार्थ व्यसन, जुए की आदत और संगी-साथियों के साथ मारपीट करके दूर करने का प्रयत्न करने लगते हैं।

→ (6) शारीरिक दोष – अनेक सर्वेक्षणों से यह स्पष्ट हुआ है कि बहुत से बाल अपराधियों में कुछ विशेष शारीरिक दोष पाए जाते हैं जैसे बच्चे काने, कम, सुनने वाले हकलाकर बोलने वाले अथवा बहुत लम्बे या बहुत छोटे कद के होते हैं। उनकी अपने साथियों द्वारा अक्सर हँसी उड़ायी जाने लगती है शरीर में आयु से अधिक शक्ति होने से बच्चे में यौनिक विकार पैदा होने लगते हैं।

→ (7) स्वच्छन्द व्यवहार – वर्तमान युग की संस्कृति में बच्चों को अधिक स्वतन्त्रता देने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है इससे बच्चों के व्यवहारों पर माता-पिता और सामाजिक नियमों का नियंत्रण कमजोर पड़ने लगता है। देर रात में घर में आना माता-पिता से अधिक से अधिक सुविधाओं की माग करना यौनिक स्वच्छन्दता के आचरण करना तथा मादक पदार्थों का सेवन करना उनकी आदत बनती जाती है बाद में यही दशाएं उन्हें अपराधी व्यवहारों की ओर ले जाती हैं।

→ (III) सामाजिक-सांस्कृतिक कारण – बाल अपराध का एक प्रमुख कारण बच्चों का दोषपूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक पर्यावरण है।

→ (1) अस्वस्थ मनोरंजन – बच्चों के जीवन में मनोरंजन का विशेष महत्व होता है। अधिकांश बच्चे टेलीविजन, सिनेमा, कॉमिक्स तरह-2 के खेलों में मित्रों के साथ हँसी-मजाक के द्वारा अपनी मनोरंजन की आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। टेलीविजन के अधिकांश कार्यक्रमों तथा चलचित्रों में हत्या, डकैती, अपहरण, छेड़छाड़ तथा तस्करी के दृश्य बच्चों में उत्तेजना पैदा करते हैं।

→ (2) दोषपूर्ण संगति – बहुत से बच्चे अपराधी गिरोहों की संगति में पड़कर अपराध करना आरम्भ करते हैं। कम बुद्धि के बच्चे को नशीली दवाओं का अभ्यस्त बनाकर या उन्हें तरह-2 के प्रलोभन देकर अपराधी गिरोह बाद में उन्हें तरह-2 अपराध करने लगते हैं –

→ (3) जनसंख्या की विभिन्नता — नगर के पर्यावरण मे एक बड़ी संख्या मे बच्चे उन बस्तियों या मोहल्लो मे रहते है जिनमे एक — दूसरे से विभिन्न संस्कृतियों, मनोवृत्तियों और पेशो के लोग साथ-2 रहते है। इन बस्तियो मे अपराधी प्रवृत्ति के लोग बच्चो को गल्यो से अपनी ओर आकर्षित करके उनसे छोटे मोटे अपराध करवाते है।

→ (4) सामाजिक नियंत्रण की कमी — जब कभी भी समाज मे नियंत्रण स्थापित करने वाले नियमो के प्रभाव मे कमी होने लगती है। जब कानूनी का प्रभाव घट जाता है, धार्मिक नियमो और संस्थाओ की शक्ति कमजोर पड़ जाती है तथा ईमानदारी के मूल्यो का कोई महत्व नही रह जाता तो बच्चो का जीवन अनियंत्रित बनने लगता है।

→ (5) सांस्कृतिक भिन्नताएँ — यह एक ऐसी दशा है जिसमे बच्चे के परिवार के नियमो तथा उसके साथियो के व्यवहारो मे बहुत भिन्नता होती है इस दशा मे बच्चा अन्तर्द्वन्द्व माता — पिता के व्यवहारो को अपनाकर अपने साथियो के बीच हँसी मजाक का पात्र नही बनना चाहता। गाँव और नगर की संस्कृति मे भी — बहुत अन्तर होता है। सांस्कृतिक व्यवहारो से उत्पन्न होने वाले भिन्नताओ से अपराधी प्रवृत्ति बच्चे मे पैदा होने लगता है।

→ (6) जाति-विभेद — भारतीय दशाओ मे उच्च और निम्न जातियो के बीच पाये जाने वाले विभेद भी बाल अपराध का प्रमुख सामाजिक कारण है।

→ (7) परस्पर विरोधी मूल्य — सभी समाजो मे बच्चो से अपने सामाजिक मूल्यो और आदर्श नियमो के अनुसार व्यवहार करने की आशा की जाती है। स्कूल मे बच्चा जब वह देखता है कि कुछ बच्चे उद्दंड और अनुशासनहीन तरीके से शिक्षको का अपमान करके शुल्क मुक्ति और दूसरी सुविधाएँ प्राप्त कर सकते है। यह दशा भी बच्चे मे अपराधी-प्रवृत्ति उत्पन्न करती है।

→ (8) सार्वजनिक भ्रष्टाचार — किसी समाज मे ऊँचे-2 भ्रष्टाचार और नैतिक पतन मे वृद्धि होती है बाल अपराधो मे भी — वृद्धि होती है।

→ (17) — अन्य कारण — बाल अपराधो के लिए पारिवारिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक दशाएँ अधिक उत्तरदायी है। अत्यधिक निर्धनता के कारण बच्चो को समुचित शिक्षा और मनोरंजन की — सुविधाए प्राप्त नही हो पाती है सम्पन्न परिवारो के — बच्चो को देखकर उनमे हीनता, ग्लानि, ईर्ष्या और उद्दण्डता की भावनाएँ साथ-2 विकसित होने लगती है। भारत-सरकार के सन् 1995 मे किये गये एक

सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ कि 78% बाल अपराधी ऐसे परिवारों से सम्बन्धित थे जिसकी मासिक आय 500 रुपये से कम थे। आर्थिक मंदी के दशा में उत्पन्न होने वाले बेरोजगारी होने के कारण बच्चों को अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए अपराधी व्यवसायों का सहारा लेना पड़ता है।

बाल अपराध उपर्युक्त सभी कारणों से स्पष्ट होता है कि समस्या की विवेचना किसी एक कारण के आधार पर ही नहीं की जा सकती।

Prom-
Dr. Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
Sasaram-

Scanned by TapScanner